ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

देव त्वष्टर्वर्धय सर्वसातये। अथर्ववेद 613/3

सब सुखों के दाता परमेश्वर ! जगत निर्माता प्रभो! हमें इतना समृद्ध कर कि सब कुछ पा सकें।
O God ! The bestower of happiness and prosperity, Creator of the world ! make us so capable that we way attain all that we aspire for.

वर्ष 38, अंक 1 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 27 अक्तूबर, 2014 से रविवार 2 नवम्बर, 2014
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

पान मसाला, गुटका, खैनी एवं नशे के खिलाफ जन-जागरुकता आन्दोलन चलाने के साथ

तीन दिवसीय प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन बिहार पटना में उत्साहपूर्वक सम्पन्न

बिहार के प्रत्येक क्षेत्र से प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्त्ताओं का भारी संख्या में सम्मिलन

जनता की भलाई से जुड़े विषयों पर बिहार में आर्यसमाज को कार्य आगे बढ़ना चाहिए - महाशय धर्मपाल

शोभायात्रा ने कराया लम्बे समय पर पटना की सड़कों को आर्यसमाज की शक्ति का दिग्दर्शन: चार किलोमीटर लम्बी शोभायात्रा और ओ३म् के ध्वजों से पट गया था पटना

बिहार राज्य आर्य प्रतिनिधि सभा के ओर से आर्य महा सम्मेलन का भव्य आयोजन पटना में किया गया जिसमें बिहार राज्य सभी जिलों के 200 आर्य समाजों के हजारों प्रतिनिधियों एवं अन्य राज्यों के आर्य समाजों के अनेक प्रतिनिधियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम महासम्मेलन के प्रथम दिवस 8 अक्टूबर 2014 प्रात: 8:00 बजे से 10:00 बजे तक यज्ञ एवं भजन का कार्यक्रम चला। अपराह्न 2:00 बजे आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी, मन्त्री रवीन्द्र गुप्ता व कोषाध्यक्ष सहदेव गुप्ता एवं सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपमन्त्री श्री भारत भूषण त्रिपाठी जी के संयुक्त नेतृत्व में विशाल शोभायात्रा का शुभारम्भ हुआ जिसमें बैण्ड-बाजे, ढोल व नगाड़ों के साथ ट्रैक्टर-ट्राली में सुन्दर झाँकियों के साथ विभिन्न विद्यालयों के 3000 छात्र-छात्रांओं ने भाग लिया। मोटर कार, व मोटर साइकिल, एवं बैलगाड़ियों के माध्यम से शोभा यात्रा आकर्षक एवं हर्षित करने वाली बन रही थी। बिहार-बंगाल एवं झारखण्ड से दिल्ली एवं अन्य राज्यों से आये हजारों आर्य महानुभावों की उपस्थिति से जुलूस ने विशाल रूप धारण कर लिया जो 4 किमी० की यात्रा कर अपने गन्तव्य स्थान पर पहुँचा। यह झाँकी अद्भूत एवं ऐतिहासिक थी जिसमें ओ३म् की ध्वज पताकाओं एवं रंग-बिरंगे सजे हुए वाहनों से नगर का वातावरण वासन्तीय बना हुआ था। शोभायात्रा ने लम्बे समय के अन्तराल पर पटना के सड़कों को आर्य समाज की शक्ति और सामर्थ्य का दिग्दर्शन कराया। जिसका असर

- शेष पृष्ठ 5 पर

प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में पटना पहुंचने पर महाशय धर्मपाल जी का पीतवस्त्र एवं माल्यार्पण से स्वागत करते बिहार सभा प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी

आर्य शिक्षा केन्द्रों को और सशक्त बनाए सभा - धर्मपाल आर्य, व. उप प्रधान, दि.आ.प्र. सभा

बिहार में आर्यसमाज का संगठन फिर से उन्नति को प्राप्त होगा - गंगा प्रसाद, प्रधान, बिहार आ. प्र. सभा

पूर्व में भी उदय हो रही है नई वैदिक क्रान्ति

नए व्यक्तियों तक वैदिक विचारधारा को पहुंचाने के लिए तीन दिवसीय जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न

- सम्बन्धित रिपोर्ट पृष्ठ 7 पर

वैदिक सिद्धान्त शाश्वत हैं केवल जानकारी के अभाव में ही इसक विरुद्ध मनुष्य आचरण करता है - स्वामी सुधानन्द

॥ ओ३म् ॥
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
के तत्वावधान में
आर्य विद्या परिषद्, दिल्ली
के अन्तर्गत समस्त
आर्य शिक्षण संस्थाओं का सामूहिक विचारोत्सव
कल, आज और कल
21 नवम्बर, 2014 (शुक्रवार)
यज्ञ - प्रात: 8.25 बजे सांस्कृतिक कार्यक्रम - प्रात: 9 से दोपहर 1 बजे
स्थान : तालकटोरा इण्डोर स्टेडियम, नई दिल्ली
संस्कार चैनल पर सीधा प्रसारण
प्रात: 9:30 बजे से 1:30 बजे तक
समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थाओं एवं आर्यजनों से निवेदन है कि सीधा प्रसारण अवश्य देखें तथा अपने परिचितों एवं मित्रों को एस.एम.एस. भेजकर सूचित करें।

वेद-स्वाध्याय

प्रथमा संस्कृति

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

आच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम।
सा प्रथमा सँस्कृतिर्विश्ववारा स प्रथमो वरुणो मित्रोऽअग्निः।।
यजुर्वेद अध्याय ७ मन्त्र १४

अर्थ—हे **(देव)** दिव्यगुण युक्त **(सोम)** शान्त एकरस परमेश्वर [हम] **(ते)** तेरे **(अच्छिन्नस्य)** अखण्ड **(सुवीर्यस्य)** शरीर एवं आत्मा के बल को बढ़ाने वाले **(रायस्पोषस्य)** अनेक सिद्धियों से युक्त योग-ऐश्वर्य के **(ददितारः स्याम)** देने वाले होवें [सर्वत्र प्रचार करें] **(विश्ववारा)** समस्त विश्व द्वारा वरणीय ग्रहण करने योग्य **(सा प्रथमा संस्कृतिः)** वह शरीर एवं मन, बुद्धि को पवित्र करने वाली संस्कृति है। **(स प्रथमो वरुणो मित्रो अग्निः)** वह प्रथम विद्यमान श्रेष्ठ मार्गदर्शक परमेश्वर ही हमारा मित्र है।

इस मन्त्र को समझने से पहले पूर्व आये मन्त्र को समझना होगा।

सुवीरो वीरान् प्रजनयन् परीह्यभि रायस्पोषेण यजमानम्। यजुः० ७.१३

हे योगिन्! (सुवीरः) श्रेष्ठ वीर के समान योगबल को प्राप्त हुये आप (वीरान्) अच्छे गुणयुक्त पुरुषों को (प्रजनयन्) प्रसिद्ध [निर्माण] करते हुये (रायस्पोषेण) योगैश्वर्य द्वारा (यजमानम् अभि परि इहि) यजमान [साधक] को सब ओर से प्राप्त हूजिये।

यदि वीरो अनु ष्यादग्निमिन्धीत मर्त्यः। साम० ८२॥

यदि कोई वास्तव में वीर बनना चाहता है तो हृदय में विराजमान अग्नि स्वरूप परमेश्वर को ध्यान द्वारा प्रकट करे। यही सबसे बड़ी वीरता है। भर्तृहरि जी कहते हैं—

मत्तेभकुम्भदलने भुवि सन्तिशूराः केचित् प्रचण्डमृगराजवधेऽपि शक्ताः।
किन्तु ब्रवीमि यमिनां पुरतः प्रसह्य कदर्पदर्पदलने विरला मनुष्याः॥

संसार में ऐसे शूरवीर तो मिल जायेंगे जो मदमस्त हाथियों के मस्तक को विदीर्ण कर उनके मद को ध्वस्त कर दें। कुछ सिंह के वध में भी समर्थ हो सकते हैं, परन्तु मैं बल देकर यह बात कहता हूँ कि कामदेव के दर्प को दलन करने वाले विरले ही होते हैं। इसको वश में रखने की शक्ति ईश्वर-भक्ति से ही आती है। **य आत्मदा बलदा** वह परमेश्वर शरीर और आत्मा के बल का देने हारा है जिसे प्राप्त कर साधक पहाड़ जैसी आपत्ति में भी अपने कर्त्तव्य पथ से विचलित नहीं होता।

प्रस्तुत मन्त्र कहता है—**अच्छिन्नस्य ते देव सोम सुवीर्यस्य रायस्पोषस्य ददितारः स्याम** हे परमेश्वर! हमें तेरी उपासना से जो अष्टसिद्धि रूप योगैश्वर्य, अखण्ड बल, अदम्य उत्साह और कामादि शत्रुओं को परास्त करने का सामर्थ्य प्राप्त हुआ है उसका सर्वत्र प्रचार-प्रसार करें। हमने यह जान लिया है कि आपकी भक्ति ही एकमात्र त्रिविध बलों को देने वाली है। शारीरिक व्याधि, मानसिक आधि का निवारण और समाधि की प्राप्ति आपकी उपासना से ही होती है। हमने इसका रसास्वादन किया है और आप्त काम होकर हम इस योगामृत का पान ज्ञान-पिपासुओं को करायें ऐसी हमारी इच्छा है। आज हम देख रहे हैं कि मानव जीवन शारीरिक और मानसिक आधि-व्याधियों से आक्रान्त होता जा रहा है। धन की आकांक्षा, परस्पर आगे बढ़ने की स्पर्धा और लोकैषणा ने उसकी सुख-शान्ति छीन ली है। आज वह मानसिक तनाव, चिन्ता, अवसाद और कुण्ठा से ग्रस्त हो गया है। हमारा यह दृढ़ विश्वास है कि प्रभु भक्ति ही उसके विकारों का शमन करेगी और इस अमृत का पान कर उसकी एषणायें भी शान्त हो जायेंगी।

सा प्रथमा संस्कृतिर्विश्ववारा सारे संसार के लोग जिसे स्वीकार करें और जो शरीर, मन-बुद्धि, आत्मा के दोषों का निवारण कर सद्गुणों को धारण कराये ऐसी संस्कृति केवल योग-संस्कृति ही हो सकती है। इसे विश्व की आदि संस्कृति भी कह सकते हैं। वैदिक संस्कृति भी इसी का नाम है।

संस्कृति जागरूकता की वह सम्पत्ति है, बोध और चेतना का वह प्रकार है जो बिना किसी बाह्य स्थिति को प्रभावित किये शोभा और शिष्टता आदि गुणों को भर देती है। इसका सम्बन्ध व्यक्ति के आन्तरिक जगत् से है। व्यक्ति के बाह्य शिष्टाचार, वार्तालाप, खान-पान और रहन-सहन को सभ्यता कहते हैं। संस्कारों से ही संस्कृति का निर्माण होता है। **संस्कारो हि गुणान्तराधानम्** गुणों की अभिवृद्धि करना संस्कार कहलाता है। जैसे बया चिड़िया एक-एक तिनके को सीकर सुन्दर घोंसला बनाती है वैसे ही परम्परागत अनुस्यूत, जुड़े हुये संस्कारों को संस्कृति कहते हैं।

आज संस्कृति के नाम पर जो नृत्य, गीत आदि के कार्यक्रम आयोजित किये जाते हैं उनका संस्कृति से दूर का भी सम्बन्ध नहीं है।

योग ही सांस्कृतिक कार्यक्रम है जो व्यक्ति के सम्पूर्ण व्यक्तित्व का विकास कर उसे परमसत्ता से मिला देता है।

योग का फल—**तदा द्रष्टुः स्वरूपेऽवस्थानम्** (योग० १.२) आत्मा की अपने स्वरूप में स्थिति होती है। **योगो हि प्रभवाप्ययौ** (कठो० २.३)=योगाभ्यास से ज्ञान का उदय और कर्म का क्षय होकर परमात्मा का साक्षात्कार होता है।

लघुत्वमारोग्यमलौलुपत्वं वर्ण प्रसादं स्वरसौष्ठवं च।
गन्धः शुभो मूत्रपुरीषमल्पं योग प्रवृत्तिं प्रथमां वदन्ति॥ (श्वेता० २.१३)

योगाभ्यास से शरीर में हलकापन, नीरोगता, मन की स्थिरता, शरीर में ओज-तेज की वृद्धि, मधुर स्वर, सुगन्ध और अल्प मल-मूत्र होने लगते हैं।

ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा (योग० १.४८) सम्प्रज्ञात समाधि से अविद्या का नाश होकर ऋतम्भरा प्रज्ञा की प्राप्ति होती है। यह प्रज्ञा वस्तु के यथार्थ स्वरूप का ज्ञान कराने में समर्थ होती है।

इस प्रकार विदित हुआ कि योग-साधना से शारीरिक रोगों का शमन, मानसिक विकारों से निवृत्ति और आत्मा का परमात्मा से मिलन होता है।

योग का किसी धर्म-सम्प्रदाय से विरोध नहीं है। परमात्मा को न मानने वाले भी योग का अभ्यास कर सकते हैं। आज विश्व में योग ही धर्म या संस्कृति का स्थान प्राप्त करता जा रहा है जिसे संसार के सभी लोग निस्संकोच हो अपनाते जा रहे हैं।

स प्रथमो वरुणो अग्निः त्रिविध तापों को दूर-कर सुख की वर्षा करने वाला परमेश्वर ही हमारा सच्चा मित्र है। **स नो बन्धुर्जनिता स विधाता।** अगले मन्त्र में उसी का वर्णन किया है।

स प्रथमो बृहस्पतिश्चिकित्वाँस्तस्माऽ इन्द्राय सुतमाजुहोत स्वाहा।
यजुः० ७.१५॥

गुरु शिष्यों को उपदेश देते हुये कहता है—हे शिष्यो! पूर्वमन्त्र में प्रतिपादित **(प्रथमः)** आदि कारण **(चिकित्वान्)** ज्ञान-विज्ञान युक्त **(बृहस्पतिः)** सब लोकान्तर और वेदवाणी का स्वामी है उस **(इन्द्राय)** सब ऐश्वर्यों को देने वाले परमेश्वर का **(स्वाहा)** सत्यवाणी से **(सुतम् आजुहोत)** ग्रहण करो।

- क्रमशः

प्रेरणादायक संस्मरण

स्वामी श्रद्धानन्द जी का हिन्दी प्रेम

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज का हिन्दी प्रेम जग जाहिर था। आप जीवनभर महर्षि दयानन्द के इस विचार को कि 'सम्पूर्ण देश को हिंदी भाषा के माध्यम से एक सूत्र में पिरोया जा सकता हैं' सार्थक रूप से क्रियान्वित करने में अग्रसर रहे। सभी जानते हैं की स्वामी जी ने कैसे एक रात में उर्दू में निकलने वाले सद्धर्म प्रचारक अखबार को हिंदी में निकालना आरम्भ कर दिया था जबकि सभी ने उन्हें समझाया कि हिंदी को लोग भी पढ़ना नहीं जानते और अखबार को घाटा होगा। मगर वह नहीं माने। अखबार को घाटे में चलाया मगर सद्धर्म प्रचारक को पढ़ने के लिए अनेक लोगों ने विशेषकर उत्तर भारत में देवनागरी लिपि को सीखा। यह स्वामी जी के तप और संघर्ष का परिणाम था। स्वामी जी द्वारा 1913 में भागलपुर में हुए हिंदी साहित्य सम्मेलन में अध्यक्ष पद से जो भाषण दिया गया था उसमें उनका हिंदी प्रेम स्पष्ट झलकता था। स्वामी जी लिखते हैं मैं सन 1911 में दिल्ली के शाही दरबार में सद्धर्म प्रचारक के संपादक के अधिकार से शामिल हुआ था। मैंने प्रेस कैंप में ही डेरा डाला था। मद्रास के एक मशहूर दैनिक के संपादक महोदय से एक दिन मेरी बातचीत हुई। उन सज्जन का आग्रह था कि अंग्रेजी ही हमारी राष्ट्रभाषा बन सकती हैं। अंग्रेजी ने ही इंडियन नेशनल कांग्रेस को संभव बनाया हैं, इसीलिए उसी को राष्ट्रभाषा बनाना चाहिए। जब मैंने संस्कृत की ज्येष्ठ पुत्री आर्यभाषा (हिंदी) का नाम लिया तो उन्होंने मेरी समझ पर हैरानी प्रकट की। उन्होंने कहा कि कौन शिक्षित पुरुष आपकी बात मानेगा? दूसरे दिन वे कहार को भंगी समझकर अपनी अंग्रेजीनुमा तमिल में उसे सफाई करने की आज्ञा दे रहे थे। कहार कभी लोटा लाता कभी उनकी धोती की तरफ दौड़ता। उसकी समझ में कुछ नहीं आ रहा था। मिस्टर एडिटर खिसियाते जाते। इतने में ही मैं उधर से गुजरा। वे भागते हुए मेरे पास आये और बोले 'यह मुर्ख मेरी बात नहीं समझता' इसे समझा दीजिये की जल्दी से शौचालय साफ कर दे। मैंने हंसकर कहा - 'अपनी प्यारी राष्ट्रभाषा में ही समझाइए।' इस पर वे शर्मिंदा हुए। मैंने कहार को मेहतर बुलाने के लिए भेज दिया। किन्तु एडिटर महोदय ने इसके बाद मुझसे आंख नहीं मिलाई।

भागलपुर आते हुए मैं लखनऊ रुका था। वहां श्रीमान जेम्स मेस्टन के यहाँ मेरी डॉ फिशर से भेंट हुई थी। वे बड़े प्रसिद्ध शिक्षाविद और कैंब्रिज विश्व विद्यालय के वाइस चांसलर हैं, भारतवर्ष में पब्लिक सर्विस कमीशन के सदस्य बनकर आये थे। उन्होंने कहा कि मैंने अपने जीवन में सैकड़ों भारतीय विद्यार्थियों को पढ़ाया हैं। वे कठिन से कठिन विषय

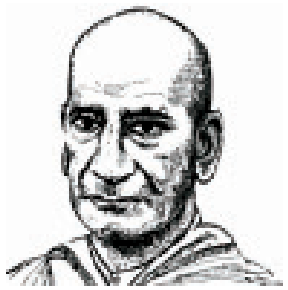

में अंग्रेज विद्यार्थियों का मुकाबला कर सकते हैं, परन्तु स्वतन्त्र विचार शक्ति उनमें नहीं हैं। उन्होंने मुझसे इसका कारण पूछा। मैंने कहा की यदि आप मेरे गुरुकुल चले तो इसका कारण प्रत्यक्ष दिखा सकता हूँ, कहने से क्या लाभ? जब तक शिक्षा का माध्यम मातृभाषा नहीं होगी, तब तक इस अभागे देश के छात्रों में स्वतन्त्र और मौलिक चिंतन की शक्ति कैसे पैदा होगी ?

(100 वर्ष पहले दिए गए विचार आज भी कितने प्रसांगिक और यथार्थ है, पाठक स्वयं अवगत हैं)

- डॉ. विवेक आर्य

अपनी अकर्मण्यता का दोष दूसरों पर क्यों?

- प्रकाश आर्य, महू

मानवीय स्वभाव है प्रायः यह देखा जाता है कि जब कोई व्यक्ति किसी कार्य में उसके द्वारा किए प्रयास से, अपनी आशा के अनुरूप परिणाम नहीं पाता है तो उसका दोष वह स्वयं की कमियों के स्थान पर दूसरों को दे देता है। या फिर वह अपने किए गए प्रयास के मूल्यांकन को नजर अन्दाज कर परिस्थितियों को दोषी ठहराने का प्रयास करता है। इस प्रकार किसी भी बहाने अपनी असफलता का दोष दूसरों के सिर मढ़ने में तनिक विचार नहीं करता। यह भी देखा जाता है कि किसी व्यक्ति द्वारा कोई गलत कार्य कर दिया तो उससे भी यह सुनने में आता है क्या करें, भगवान ने उसकी बुद्धि वैसी कर दी थी, या दूसरा वाक्य होता है क्या करें उसके भाग्य में था ही ऐसा। यहां मानवीय गलती का कारण ईश्वर या भाग्य को बताकर मानव निर्दोष हो जाता है।

सफलता का सूत्र है निश्चित लक्ष्य, लक्ष्य पूर्ति हेतु सत्यज्ञान, आत्मविश्वास, पूर्ण प्रयास, लक्ष्य के प्रति दृढ़ता, साथ में ईश कृपा। इनमें से किसी एक का भी न होना लक्ष्य तक पहुंचने में बाधक हो जाता है। समाज और राष्ट्र पर चिन्तन करें तो यहां दो दृष्टिकोणों को देखा जा सकता है। एक पोषक (रचनात्मक) दृष्टिकोण दूसरा शोषक (क्षतिकारक) दृष्टिकोण। समाज या राष्ट्र को क्षति पहुंचाने वालों की संख्या बहुत कम है और उसकी तुलना में उनके प्रति अच्छे भाव रखने वाले या उसको नुकसान न चाहने वालों की संख्या बहुत अधिक है।

किन्तु यह कैसी विडम्बना है, कि बहुत छोटी सी संख्या वाले तत्त्वों ने समाज व राष्ट्र की बहुत बड़ी संख्या को प्रभावित कर कष्ट, भय, असुरक्षित वातावरण से घेर रखा है। ऐसा क्यों ?

यहां कारण स्पष्ट है बहुत अधिक संख्या वालों का अपने समाज या राष्ट्र में फैली दूषित प्रवृत्ति और दूषित वातावरण से बचाने का, उसे मुक्त कराने का दृढ़ संकल्प नहीं हैं, इस ओर लक्ष्य नहीं है, विचार नहीं, कैसे इससे छुटकारा पाया जा सकता है वह ज्ञान नहीं है, इस हेतु आत्म विश्वास व प्रयास की बड़ी कमी है। यह सब अकर्मण्यता बोधक स्थिति है। ''**अकर्मा दस्यु**'' हमारी सनातन संस्कृति में अकर्मण्य को दस्यु कहा है।

''**न ऋतेश्रान्तस्य सखाय देवा**'' वेद ने हमें सन्देश दिया। जो स्वयं प्रयत्नशील नहीं उसकी सहायता तो दैवी शक्तियां भी नहीं करती।

आज सनातन धर्मी अपनी संस्कृति पर हो रहे प्रहार जिसमें प्रेम, भय, लालच के माध्यम से होते बलात् धर्म परिवर्तन पर कभी-कभी चिन्ता कर लेते हैं। इसका दोष वे उन लोगों पर थोपते हैं जो इस प्रकार से योजनाबद्ध तरीके से अपनी संख्या बढ़ाने के लक्ष्य की ओर तेजी से बढ़ रहे हैं। तेजी से होते धर्म परिवर्तन के कार्य को वे केवल कोसते हैं। कुछ व्यक्तियों का विचार केवल यहीं तक सीमित है कि सनातन धर्मियों को जो लोग सनातन धर्म से दूर करने में लगे हैं वे ही दोषी हैं, पापी हैं, उनके कार्य को गलत बताते हुए, उनकी निन्दा कर देते हैं। बस यही उनकी अपने धर्म के प्रति कर्त्तव्य मानकर संतुष्टि हो जाती हैं।

वैसे यह सत्य है कि किसी को भी अपनी कमियों का आंकलन करना थोड़ा कठिन और साहस का कार्य है। वे क्या कारण हैं जिनके कारण सनातनधर्मी हमसे बिछड़ रहे है, इस पर कभी चिन्तन नहीं किया? आज हमारी व्यक्तिगत विकास की चाह में समाज और राष्ट्र का कोई महत्त्व ही नहीं रह गया।

हम दूसरों पर उनके द्वारा सेवा शिक्षा, चिकित्सा, सहायता के नाम पर धर्म परिवर्तन करवाने का आरोप लगाते हैं। परन्तु क्या कभी हमने निर्धन, पिछड़े, असहाय, अभावग्रस्त समाज के लिए कभी ऐसा करने का प्रयास किया? यदि नहीं तो, मात्र किसी पर दोषारोपण कर अपनी अकर्मण्यता को छिपाना कहां तक उचित है?

हमारे द्वारा निर्मित जाति-पाति के कलंक से पीड़ित व्यक्तियों की समाज में बहुत बड़ी संख्या है जो आज भी उपेक्षित है, तिरस्कृत है। ऐसे व्यक्ति अपने को हिन्दू समाज में बहुत छोटा और अपमानित मानते हैं जिन्हें हमने कभी समानता का दर्जा नहीं दिया, जब मौका मिला उनका अपमान किया। इसी अपमानजनक व भेदभाव की नीति से त्रस्त होकर जब कोई दूसरा उन्हें गले लगाता है, सम्मान जनक स्थान देता है तो ऐसे पीड़ित व्यक्ति उसमें सुकून पाते हैं, सम्मान पाते हैं फिर स्वाभाविक ही है वे वहां उनसे जुड़ जाते हैं। और तो और हमने सनातन धर्म को लक्ष्मण रेखा बना रखा है जहां इससे बाहर तो कोई भी जा सकता है, परन्तु वह इसमें आ नहीं सकता। उन्हें हम अपने साथ मिला नहीं सकते। ''**वसुधैव कुटुम्बकम**'' का थोथा नारा फिर भी रात दिन लगाते हैं। यह तो सौभाग्य से पहला प्रयास आर्य संन्यासी स्वामी श्रद्धानन्द ने शुद्धि कर अनेक व्यक्तियों को जो सनातन धर्म में आना चाहते थे उन्हें साथ जोड़ा। इसके अतिरिक्त लाखों जो सनातन धर्म से बिछुड़ गए थे, उन्हें फिर से शुद्ध कर सनातन धर्म में मिलाया। अन्यथा आज देश की स्थिति कुछ और ही होती। स्वामी श्रद्धानन्द का यही प्रयास बलिदान का कारण बना। जन्मगत जाति को आर्य समाज नहीं मानता, न यह सनातन है। आर्य समाज कर्म के अनुसार वर्ण व्यवस्था को मानता है।

किन्तु क्या हमारी इस कमजोरी और अज्ञानतावश मानी जा रही जाति प्रथा रूप खाई को हमने कभी पाटने का प्रयास किया? यदि इस ओर ध्यान देते तो संभवतः इतनी क्षति सनातन धर्मी अनुयायियों की संख्या की नहीं होती।

हमारा हिन्दू समाज अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन बड़ी भीड़-भाड़ इकट्ठी करने मात्र से समझ रहा है, धर्म के नाम पर मनोरंजन, रास रंग, भण्डारों को समझ रहा है। करोड़ों, अरबों रुपया इसी काम पर नष्ट किया जा रहा है जो मन्दिर पहले से बने हैं उनकी व्यवस्था तो ठीक से हो नहीं रही, कई मन्दिर सूने पड़े हैं, खण्डर हो रहे हैं किन्तु नए-नए विशाल दर्शनीय काफी महंगे नित नए मन्दिरों का निर्माण व्यक्तिगत छवि बनाने या अन्य कारणों से हो रहा है। दूसरी ओर मानव रूपी चैतन्य देवी-देवताओं को भूखे मरना पड़ रहा है, गरीबी की दशा इतनी विकट हो गई कि माँ-बाप, बच्चों का पालन पोषण न कर पाने के कारण उन्हें बेच देते हैं। रहने का ठिकाना नहीं, बीमारी का अन्त, दवा न मिलने से मौत होती है। इसी कारण भी लाखों सनातन धर्मी जीवन बचाने के लिए दूसरों सम्प्रदायों के साथ जा रहे हैं।

क्या इस पर भी कभी विचार किया?

क्या हमारा कर्त्तव्य नहीं है कि हम धर्म के नाम पर दिखावे, मनोरंजन के नाम पर और अनावश्यक खर्चों को रोक कर नर-नारायण (मानव मात्र) की ओर ध्यान देकर उनकी मदद करें, संस्कृति की रक्षा करें। आज यही महत्त्वपूर्ण है।

दूसरों को दोष मत दो, धर्म नाम पर वे लोग प्रत्येक कार्य अपने संगठन की रक्षा और वृद्धि के लिए करते हैं। फिजूल खर्ची, दिखावे के स्थान पर अपनी कौम पर खर्चा करते हैं उनका यह सोच ठीक है, इसमें गलत कुछ भी नहीं है।

यह बात अलग है अज्ञान व मजहबी जुनून में वे धर्म और मानवता विरोधी कार्यो में इस संगठन का लाभ लेना चाहते हैं, जो अनुचित है, किन्तु जो उन्होंने अपना धर्म समझा वे उसके प्रति समर्पित हैं, उसे पूरा करने में लगे हैं। किन्तु जैसा उन्हें समझा वे उसमें पूरी निष्ठा से लगे है, इस हेतु लाखों व्यक्ति पूरा समय देते हैं। दूसरी ओर हमारे पास तो समय ही नहीं है। समय की छोड़ो विचार ही नहीं है।

हमारा लक्ष्य सनातन धर्म की रक्षा उसका प्रचार-प्रसार कर सनातन धर्म की शक्ति बढ़ाना नहीं है। हमारी मान्यता में तो सभी एक समान हैं, सबका आदर करना चाहिए, हिंसक विचारधारा को भी स्वीकार कर रहे हैं, मानवता पर बर्बर अत्याचार करने वाली विचार धारा को भी सम्मान दे रहे हैं, सभी रास्ते एक जगह जाते हैं, अनेकता में एकता है, ऐसे बोगस नारों से अपना गौरव बढ़ाने में लगे हैं। इसका परिणाम सनातन धर्म के प्रति यह भी हमारी कमजोरी का एक कारण है। अपनी आस्था में दृढ़ मान्यता में कमी है और सनातन धर्म के सिद्धान्तों की मान्यताओं की उपेक्षा है।

आज समय तेजी से आपात स्थिति की ओर बढ़ता जा रहा है, खेत जब चिड़िया चुग लेगी तब सिर्फ हमारे पास पछतावा रहेगा, बाकी कुछ नहीं। हमारी अकर्मण्यता के कारण करोड़ों सनातनधर्मी धर्म से विमुख हो गए आसाम, मेघालय, अरूणाचल, कश्मीर, केरल से सनातन धर्म की पहचान धीरे-धीरे समाप्त हो रही है। कई प्रान्तों में भी अब इस प्रकार की योजना चल रही है।

इसलिए कर्मशील बनकर किसी को दोष मत दो, छोटी लकीर को बड़ी बनाने का प्रयास करें, यही समय की मांग है। हमारा धर्म कहता है ''**कृतं में दक्षिणे हस्ते जयो मे सव्य आहितः**'' हमारे दाहिने हाथ में कर्म और बाए हाथ में विजय है। **ओजः कृष्व सं गृभायः** (अथर्व. 20. 94.4)। पुरूषार्थ करो और इष्ट वस्तु को प्राप्त करो। इसलिए अपनी अकर्मण्यता को त्यागकर सनातन धर्मी अपने सामाजिक व राष्ट्रीय कर्म को सोचें? एक उर्दू के शायर ने लिखा -

जिसे खुद न हो होश, अपने संभलने का। खुदा भी उस कौम की हिफाजत नहीं करता।।

- मन्त्री, सार्वदेशिक आ. प्र.. सभा

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण
(द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश

• प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
• विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 60 रु.	
• स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति सत्यार्थ प्रकाश के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्य साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. 011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

दक्षिण भारत के केरल में पहली बार हुआ सार्वजनिक मेलों में वैदिक साहित्य प्रचार कार्य

60 हजार के साहित्य का विक्रय होना अपने आप में महत्वपूर्ण

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा तिरुवनन्त पुरम् पुस्तक मेले में साहित्य प्रचार

केरल राज्य के राजधानी तिरुवनन्त पुरम् के पुथारीकण्डम् मैदान में 'नेशनल बुक ट्रस्ट' के तत्त्वावधान में भव्य पुस्तक मेले का आयोजन 4 अक्टूबर से 12 अक्टूबर 2014 तक किया गया। जिसमें दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं कश्यप आश्रम कालीकट (केरल) के संयुक्त सहयोग से 'आर्ष-साहित्य' की बुक स्टॉल का उद्घाटन माननीय पार्षद् (तिरुवनन्त पुरम्) अशोक कुमार के कर कमलों से हुआ। वैदिक साहित्य की इस बुक स्टॉल पर ग्राहकों ने बहुत उत्साह से पुस्तकों को क्रय किया। यहाँ तक कि क्षेत्र के माननीय संसद ने स्वयं पुस्तकालय पर पहुँचकर वैदिक पुस्तकों का क्रय किया। बुक स्टॉल की विशेषता यह थी यहाँ साहित्य कई भाषाओं में उपलब्ध था जिनमें हिन्दी, संस्कृत, मलयालम एवं तमिल मुख्य थी। महर्षि दयानन्द सरस्वती जी द्वारा रचित 'सत्यार्थ-प्रकाश' वेद भाष्यों एवं वेद भाष्यों की V.C.D का प्रमुख रूप विक्रय हुआ। V.C.D Set में चारों वेदों का Audio विद्यमान है। पुस्तक पुस्तक स्टॉल के प्रभारी श्री रवि प्रकाश ने यह जानकारी दी कि- डॉ. श्रीमती सयोजिनी शंकर अग्निहोत्री जी प्रशान्त आर्य, तथा सन्तोष कुमार जी ने बुक स्टॉल की सभी व्यवस्थाओं हेतु भरपूर सहयोग प्रदान किया। अत: हमें ऐसे पुस्तक मेलों के माध्यम से वैदिक साहित्य के प्रचार एवं प्रसार करने का एक सशक्त माध्यम है।

गुरूकुल यमुनातट मंझावली, फरीदाबाद में सवा करोड़ गायत्री महायज्ञ एवं योग साधना शिविर आरम्भ

यमुना जी के पावन तट पर देवस्थली गुरूकुल मंझावली 21वें वार्षिकोत्सव को भव्य वृहद् समारोह के रूप में मना रही है। जिसमें ज्ञान-विज्ञान एवं आकर्षण का केन्द्र बने सवा करोड़ गायत्री तथा चतुर्वेद ब्रह्म पारायण एवं योग साधना शिविर' का आयोजन श्रद्धेय स्वामी चितेश्वरानन्द जी की अध्यक्षता एवं अनेक गुरूकुलों के संस्थापक स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा से धूम-धाम से मनाया जा रहा है।

कार्यक्रम का शुभारम्भ श्री महाशय धर्मपाल जी, आचार्य बालकृष्ण जी एवं श्री स्वामी कर्मवीर जी के पवित्र कर कमलों द्वारा ध्वजारोहण से हुआ गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के द्वारा वेदपाठ से महायज्ञ का प्रारम्भ हुआ। स्वामी जी ने कहा कि- वैदिक काल में ऋषियों ने यज्ञों पर अनेक अनुसंधान किए हैं। उसी परम्परा का निरन्तर का निर्वहन होता चला आ रहा है। आचार्य बालकृष्ण जी ने कहा कि जब तक संसार में यज्ञों का प्रचलन रहा तब तक यह संसार रोगों से रहित और आनन्द से पूर्ण था। महाशय धर्मपाल जी ने अपने जीवन पर यज्ञ के प्रभाव का वर्णन किया। महाशय जी को प्रशस्ति पत्र एवं श्रीफल देकर सम्मानित किया। मंच का संचालन दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के यशस्वी प्रधान ब्र० राजसिंह आर्य ने किया।

अन्त: में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती एवं स्वामी चितेश्वरा नन्द सरस्वती जी ने जनसमुदाय को आशीर्वाद दिया और योग साधना शिविर में नि:शुल्क प्रति भागी होकर धर्म एवं स्वास्थ्य लाभ लेने का सन्देश दिया। - ***संयोजक***

गुरुकुल मंझावली में पधारने पर महाशय धर्पाल जी को सम्मान पत्र देकर सम्मानित करते स्वामी प्रणवानन्द जी सरस्वती। महाशय जी ने सम्मान को शिरोधार्य करके गुरुकुल का अभार व्यक्त किया आ। इस अवसर पर उपस्थित जन समुदाय को सम्बोधित करते सभा प्रधान ब्र. राजसिंह आर्य जी।

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा जम्मू-कश्मीर के तत्त्वावधान में

बाढ़ पीड़ितों हेतु राहत कार्य जारी : राहत सामग्री का निरन्तर वितरण

जम्मू बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों में राहत सामग्री वितरण से पूर्व यज्ञ एवं आर्यसमाज से राहत सामग्री प्राप्त परिवारों के साथ जम्मू सभा के अधिकारीगण

प्रथम पृष्ठ का शेष

जन-मानस के हृदयों पर लम्बे समय तक छाया रहेगा।

महासम्मेलन के दूसरे दिन प्रात:काल यज्ञ के उपरान्त आर्य जगत के प्रसिद्ध समाज सेवी दानवीर महाशय धर्मपाल जी आर्य (M.D.H) के कर-कमलों द्वारा ध्वजारोहण हुआ। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के उपप्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल जी के स्वागत भाषण से कार्यक्रम का शुभारम्भ हुआ जिसमें उन्होंने बिहार आर्य समाजों के द्वारा आर्य समाज के आन्दोलन में दिए गए योगदान को महत्त्वपूर्ण बताया। जिसका सुखद् परिणाम सम्मेलन में दृष्टिपात हो रहा है। भारत के प्रसिद्ध मूर्धन्य विद्वानों में शुमार श्री वेदप्रकाश श्रोत्रिय का रहस्य पूर्ण उद्बोधन, श्रीमती, स्वेदश आर्या, डा० ऋचा योगमयी श्री व्यास नन्दन शास्त्री, विनोद शास्त्री एवं नवल किशोर शास्त्री सरीखे विद्वानों ने वैदिक विचारों को जन मानस तक पहुँचाने का आह्वान किया। भजनोंपदेशक दयानन्द सत्यार्थी ने मधुर संगीत से ज्ञान व मनोरंजन मिश्रण प्रस्तुत किया। कार्यक्रम के तीसरे दिन शिक्षा सम्मेलन एवं राष्ट्र रक्षा-सम्मेलनों का आयोजन हुआ जिसके मुख्य अतिथि क्षेत्रीय प्रचारक श्री स्वान्त रंजन जी उपस्थित हुए। महाशय धर्मपाल जी ने ऋषिवर के सपनों का साकार करने के लिए तन-मन-धन से संलग्न रहने का आह्वान किया। और सुझाव दिया कि- जनता की भलाई से जुड़े विषयों पर बिहार में आर्य समाज को कार्य आगे बढ़ाने में पूर्ण पुरूषार्थ करना चाहिए जिससे समाज और उन्नति को प्राप्त हो। दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के वरिष्ठ उपप्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी ने आर्य शिक्षा केन्द्रों को सशक्त बनाने और वैदिकता से सीधा जोड़ने का आह्वान किया जिसमें वैदिक ज्ञान का ओत-प्रोत बालक के जीवन में प्रवाहित होकर समाज का कल्याण करें। श्री रमेन्द्र गुप्त जी ने युवा कार्यकर्ताओं एवं महिलाओं को प्रेरित करते हुए कहा कि- उन्हें आर्य समाज में अपनी भागीदारी सुनिश्चित करनी होगी तथा समाज उत्थान के कार्यों में रूचि बढ़ानी होगी जिससे आर्य समाज नई बुलन्दियों पर पहुंच सके क्योंकि युवा ही राष्ट्र की रीढ़ होती है। सम्मेलन में श्री सुरेश शास्त्री, स्वदेश आर्य, श्री विनय आर्य महामन्त्री (दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा) श्री भारत भूषण त्रिपाठी एवं उपस्थित अनेक विद्वानों ने अपने विचार आर्य समाज के उत्थान, प्रचार व प्रसार के लिए प्रकट किए। अन्त में आर्य प्रतिनिधि सभा बिहार के प्रधान श्री गंगा प्रसाद जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि बिहार राज्य में ऐसा अद्भुत महासम्मेल 45 वर्षों के पश्चात् हुआ जिसको एक ऐतिहासिक कार्यक्रम कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी। इस प्रकार के कार्यक्रमों से आर्य समाज का संगठन फिर से उन्नति को प्राप्त होगा, बिहार के प्रत्येक क्षेत्र से प्रतिनिधियों एवं कार्यकर्ताओं का ऐसा भारी संख्या में सम्मिलन उत्साह को बढ़ाने वाला और देश में अपने अस्तित्व का बोध कराने वाला है। उन्होंने सभी आगन्तुकों, विद्वानों एवं महाशयों का हृदय से धन्यवाद किया।

युवा कार्यकर्ता एवं महिलाओं में आर्यसमाज के कार्य को करने की रूचि को और बढ़ाना होगा - रमेन्द्र गुप्त

बिहार प्रान्तीय आर्य महासम्मेलन में मंचस्थ महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, बिहार सभा के प्रधान श्री गांगा प्रसाद एवं मन्त्री श्री रमेन्द्र गुप्त एवं दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य जी। बिहार के सभी जिलों से पधारे आर्य कार्यकर्तागण।

गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम देवघर (झारखण्ड) का जीर्णोद्धार हेतु शिलान्यास

महाशय धर्मपाल जी आर्य अपने शिष्ट मण्डल के साथ बिहार के देवघर में वैद्यनाथ धाम गुरूकुल आश्रम में पहुँचे। (और वहाँ के सभी पदाधिकारियों से साक्षात्कार कर) शिलान्यास समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित अपने उद्बोधन में महर्षि के सपनों को पूरा करने के लिए अपने इरादों को प्रकट किया। महाशय जी ने वेदोच्चारण के साथ विद्यालय भवन का शिलान्यास किया। जिस गुरूकुल का उद्घाटन 1912 ई. में हुआ था वह आज मृत पड़ा है। महाशय जी दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि-यह राष्ट्र की अमूल्य धरोहर है इसकी रक्षा और परिवर्द्धन करना प्रत्येक नागरिक का कर्त्तव्य है। उन्होंने कहा कि-आर्य समाज के अन्तर्गत वैदिक शिक्षा के केन्द्र रहे गुरुकुल महाविद्यालयों का वर्तमान में मृत होना हमारे लिए अशोभनीय एवं दु:खद् घटना तो है ही अपितु नई पीढ़ी के लिए भी विनाशकारी है। अत: हमें गुरुकुलीय पद्धति को संचालित करने के लिए और बालकों के जीवन को एक नई दिशा देने के लिए कठिन परिश्रम करना ही होगा। महाशय जी ने भावुक मुद्रा में घोषणा की कि- गुरुकुल का पुन: जीर्णोद्धार तो होगा ही साथ ही इस परिसर में एक अत्याधुनिक नए विद्यालय का निर्माण भी किया जाएगा। जिसमें बालक सभी आधुनिक विषयों के ज्ञाता बनेंगे और देश का नाम रोशन करेंगे। विद्यालय तो तभी चलेगा जब प्रथम सत्र सामान्य एवं द्वितीय सत्र में गरीब बालकों की शिक्षा हेतु व्यवस्था होगी। महाशय जी ने अपनी पवित्र आय से एक करोड़ रुपये धनराशि की तथा 25 लाख रुपये की धनराशि से प्राचीन गुरुकुल का जीर्णोद्धार भी किया जाएगा। महाशय जी के इस वक्तव्य का उपस्थित जन समुदाय ने स्वागत किया तथा सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की। कार्यक्रम की अध्यक्षता पूर्व मन्त्री कृष्णानन्द झा ने इस कार्य को राष्ट्र उन्नति के लिए मील का एक पत्थर बताया जिससे लाखों बालकों के भविष्य का निर्माण होगा। इस शुभ अवसर पर श्री भारत भूषण त्रिपाठी, सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री धर्मपाल आर्य, श्री खुशहाल चन्द्र श्री नरेश अग्रवाल, डा. संजय, श्री राजीव आर्य एवं विनय आर्य आदि गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पब्लिक सेवा न होने के कारण निजी हवाई जहाज से गुरुकुल देवघर पहुंचे महाशय जी

देवघर में स्पेशल हवाई जहाज से पहुंचे महाशय जी साथ में हैं सार्वदेशिक सभा के उप प्रधान श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, उपमन्त्री श्री विनय आर्य, दिल्ली सभा के वरिष्ठ उप प्रधान श्री धर्मपाल आर्य एवं आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली के महामन्त्री श्री राजीव आर्य जी। गुरुकुल महाविद्यालय वैद्यनाथधाम देवघर के जीर्णोद्धार के लिए शिलान्यास एवं नामपट्ट का लोकार्पण करते महाशय धर्मपाल जी साथ में हैं श्री प्रेम अरोड़ा जी एवं झारखण्ड सभा के प्रधान श्री भारत भूषण त्रिपाठी जी।

धार्मिक स्थानों पर पशु बलि पर शिमला हाई कोर्ट द्वारा प्रतिबन्ध : आर्यसमाज द्वारा निर्णय का स्वागत

भारतीय वैदिक संस्कृति एवं वेदों में पशु बलि का कोई विधान नहीं

- रामफल आर्य, मन्त्री
आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल

माननीय उच्च न्यायालय शिमला (हि०प्र०) ने धार्मिक स्थलों (मन्दिरों) एवं अन्य धार्मिक आयोजनों पर प्रदेश में पशु-बलि पर प्रतिबन्ध लगा कर एक ऐतिहासिक निर्णय दिया है। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश इस निर्णय का हार्दिक स्वागत करती है। यह अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि माननीय न्यायालय ने पर्यावरण की रक्षा, प्राणीमात्र के लिए दया की भावना, निरपराध मूक जीवों के प्रति क्रूरता की समाप्ति, समाज में लम्बे समय से चली आ रही कुप्रथा को मिटाने के लिए अपना यह प्रशंसनीय निर्णय दिया।

उल्लेखनीय है कि किसी भी आर्ष ग्रन्थ यथा वेद, दर्शन, उपनिषद्, मनुस्मृति, रामायण, महाभारत आदि में कहीं पर भी किसी भी पशु हिंसा का विधान नहीं है। अपितु इसके विपरीत अनेकों स्थानों पर इन मूक प्राणियों की रक्षा का ही विधान किया गया है। इन ग्रन्थों के सैकड़ों ऐसे प्रमाण उपस्थित किये जा सकते हैं जिनमें पशुओं के रक्षा करने हेतु उपदेश दिया गया है। उदाहरणार्थ हम कुछ प्रमाण दे रहे हैं:-

टिप्पणी :- "महर्षि दयानन्द सरस्वती के निर्वाण को 131 वर्ष व्यय हो चुके है। विश्व धरा पर वे ही ऐसे निर्भीक समाज सुधारक युगप्रवर्तक हुए जिन्होंने इस युग में उदात्त रूप से पाखण्ड अन्धविश्वास अज्ञान एवं रूढ़ि परम्पराओं का दृढ़ता से खण्डन किया जिसके परिणाम स्वरूप देश में अद्भुत परिवर्तन हुआ। परन्तु वर्तमान समय में भी शिक्षा की उपयोगिता को ग्रहण करने वाले पुरूष भी कही-कही अन्धविश्वास और अज्ञान से ग्रस्त है। जिस कारण देवपूजा, एवं तथाकथित देवी को प्रमन्न करने हेतु बलि जैसे कुकृत्य आज भी विद्यमान है। अत: ऐसी कुरितियों को समूल नष्ट करने के लिए कर्त्तव्य बद्ध रहना चाहिए साथ ऐसी समस्याओं को अपने विधान, सदन एवं संसद-सदनों प्रधानमन्त्री एवं राष्ट्रपति तक पहुँचाएं। जिससे राष्ट्रीय स्तर पर सुधार की दीर्घ सम्भावनाएँ प्रस्तुत हो।"

यजमानस्य पशून् पाहि (यजुर्वेद 1/2)

यजमान के पशुओं की रक्षा करो।

इममूर्णायुं वरूणस्य नाभिं त्वचं पशूनां द्विपदां चतुष्पदाम्। त्वष्टुः प्रजानां प्रथम जनित्रमग्ने मा हिंसीः परमे व्योयमन्।।

(यजुर्वेद 12/40)

अर्थात् इन ऊन रूपी बालों वाले भेड़, बकरी, ऊंट आदि चौपाये तथा पक्षी आदि दो पग वालों को मत मार।

वर्षे वर्षेश्वमेधेन यो यजेत शतं समाः। मांसानि च न खादेद्यस्तयोः पुण्यफलं समम्। (मनु० 5/5)

जो सौ वर्षों पर्यन्त अश्वमेध यज्ञ करता है और जो जीवन भर मांस नहीं खाता, दोनों का समान फल मिलता है।

सुरां मत्स्यन्मधु मांसमासवकृस रौदनम्। धूर्तैः प्रवर्तितं ह्येतन्नैतद्वेदेषु कल्पितम्।। (म.भा. शान्तिपर्व 265/9)

सुरा, मछली, मद्य, मांस, आसव, कृसरा आदि खाना धूर्तों ने प्रचलित किया है। वेद में इन पदार्थों के खाने-पीने का विधान नहीं है।

अहिंसा परमो धर्मः सर्वप्राणभृतां वरः।। (महाभारत आदिपर्व 11/13)

किसी भी प्राणी को न मारना परम धर्म है। योग दर्शन में पांच यमों में महर्षि पतञ्जलि ने सर्वप्रथम स्थान अहिंसा को ही दिया है:- अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य एवं अपरिग्रह ये पांच यम हैं।

महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश के दसवें समुल्लास में लिखा है:-

"मद्य मांस का ग्रहण कभी भूल कर भी न करें।"

"हाथी, घोड़े, ऊंट, बकरी, गधे, आदि से बड़े उपकार होते हैं। इन पशुओं के मारने वालों को सब मनुष्यों की हत्या करने वाले जानियेगा। देखो! जब आर्यों का राज्य था तब तक ये महोपकारक गाय आदि पशु नहीं मारे जाते थे तभी आर्यावर्त्त व अन्य देशों में बड़े आनन्द में मनुष्य आदि प्राणी बसते थे।"

सन्त कबीर सन्तों में मुख्य माने जाते हैं। उनके कबीर बीजक में लेख है:-

काजी काज करहु तुम कैसा।
घर-2 जाह करावहु भैंसा।
बकरी मुर्गी किन फरमाया।
किसके हुकम तैं छुरी चलाया।।
दर्द न जाने पीर कहावैं।
बैतां पढ़-पढ़ जग समुझावै।।
कह हि कबीर सैयाद कहावै।
आप सरीखे जग कबुलावे।।

गुरू ग्रन्थ साहब में प्राणी हिंसा का निषेध:-

जेरतु लगे कपडीं जामा होई पलीत। जेरत पीवहि माणसा तिन कीउ निरमल चीत।।

(माझ की वार महला 1.1.6)

हिंसा तऊ मनते नहीं छूटी जीभ दया नहीं पाली। (राग सारंग परमानन्द)

मजन तेग वर खूने कसे वे दरेग।
तुरा नीज खूनास्त वा चराव तेग।।

(जफरनामा गुरू गोविन्द सिंह जी)

अर्थात् किसी की गर्दन पर नि:संकोच होकर खड्ग न चला नहीं तो तेरी गर्दन भी आसमानी तेग से काटी जायेगी। और भी कितने ही उदाहरण प्रस्तुत किये जा सकते हैं परन्तु हमने केवल दिग्दर्शन के रूप में इतने ही लिये हैं। इसके अतिरिक्त तनिक निष्पक्ष होकर विचारिये कि:-

- ईश्वर सब प्राणियों का पिता होने से सब प्राणी उसके पुत्र हैं। क्या कोई पुत्र को मार कर पिता का प्रिय बन सकता है?

इतिहास साक्षी है कि माताओं ने अपने पुत्रों की रक्षा के लिये एक बार नहीं लाखों बार अपने बलिदान दिये हैं। लेकिन निर्दोष और मूक प्राणियों को मारकर माता का अर्पित करना कहां का न्याय है?

- सभी देवी देवताओं के वाहन पशु-पक्षी हैं फिर उनका वध देवताओं के नाम करना कितना भयंकर पाप है।

- धार्मिक एवं सामाजिक आयोजन (पर्व) देश के लोगों में उत्साह, प्रेम, भाईचारा, परस्पर सहयोग तथा प्राणीमात्र के प्रति कल्याण की भावना उत्पन्न किया करते हैं। वहां पर मूक प्राणियों की हिंसा करके रक्त बहाने का क्या काम?

- आज से लगभग 1500-2000 वर्ष पूर्व यह कार्य कभी भी, कहीं भी नहीं किया जाता था। फिर धर्म में तो हिंसा का कोई स्थान नहीं है वह भी निरपराध मूक प्राणियों की हिंसा। यह तो अत्यन्त निन्दनीय है धर्म का उद्देश्य किसी के प्रति वैर भाव या स्वार्थ का भाव रख कर उसके प्राणों को लेना नहीं है अपितु सभी के प्रति प्रेमपूर्वक व्यवहार करना है।

इस प्रकार से पशु-बलि न तो शास्त्रोनुमोदित है, न विज्ञान, न मानवता और न ही धर्म के अनुसार है। अत: यह हर हाल में बन्द होनी ही चाहिए।

आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश के माननीय मुख्य मन्त्री जी के इस निर्णय का भी स्वागत करते हुए उनका धन्यवाद करती है कि वे न्यायालय के निर्णय के अनुसार ही कार्य करेंगे।

आप श्रीमान् जी से भी अनुरोध है कि इस बारे में न्यायालय के निर्णयानुसार कार्य करते हुए समाज से इस कुप्रथा का अन्त करने में अपना श्रेष्ठ योगदान देने की कृपा करें।

पीड़ितों की सेवा ही हम सबका राष्ट्रीय एवं धार्मिक कर्त्तव्य

जम्मू-कश्मीर बाढ़ पीड़ितों सहायतार्थ प्राप्त दान की सूची

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा को प्राप्त राशि

1.	आर्य समाज इन्द्रपुरी, दिल्ली	3100
2.	आर्य समाज रोहताश नगर	21000
3.	आर्य समाज रानीबाग, दिल्ली	17200
4.	आर्य समाज नारायणा विहार	5100
5.	आर्य समाज सुन्दर विहार	11001
6.	आर्य समाज करोल बाग	31000
7.	आर्य समाज सैनिक विहार	31000
8.	आर्य समाज केशवपुरम्	5100
9.	श्रीमती कृष्णा सेठी जी	2000
10.	श्री जे.एस. बाल्यान, इन्द्रपुरी	3100

आर्य प्रतिनिधि सभा जे.के. को प्राप्त राशि

1.	श्री जगमोहन गुप्ता पंजाबी बाग	20000
2.	आर्य समाज इन्द्रानगर लखनऊ द्वारा एकत्र राशि	15205
	माता महेशा देवी	2500
	रमेन्द्र देव वर्मा	1500
	रमेश चन्द्र त्रिपाठी	1100
	लक्ष्मण प्रसाद आर्य	1100
	अभय पाल सिंह	1000
	सुश्री आनन्द कुमारी	1000
	डॉ. प्रतुल राज गुप्ता	1000
	कान्ति कुमार	1000
	जय प्रकाश आर्य	500
	डॉ. अनिल आहुला	500
	मनबासा राय	500
	सुरेन्द्र कुमार निगम	500
	डोरी लाल	500
	डॉ. वेद प्रकाश	500
	रमेश चन्द्र (एच.ए.एल.)	500
	मूल चन्दर	253
	श्रीमती सरिता श्रीवास्तव	251
	जी.के. मिश्रा	250
	नरसिंह पाल	250
	आनन्द प्रकाश वर्मा	250
	मधुर अग्रवाल	250
3.	श्री मनीष आर्य, हजरत गंज	1100
4.	आर्य समाज राजपुर बनेड़ा	2000
5.	श्रीमती नताशा समीर महाजन	2000
6.	श्रीमती सुकीर्ति व श्री संगीत गुप्ता	2000
7.	आर्य समाज त्रिकुटा नगर जम्मू के सदस्यों द्वारा एकत्र राशि	16600
	श्रीमती अर्चना व श्री राजेश, सिंगापुर	5100
	श्रीमती सुमन गुप्ता, छन्नी हिम्मत	5000
	श्री सुरेन्द्र शर्मा, छन्नी हिम्मत	1000
	श्री रमेश गुप्ता, ग्रेटर कैलाश	1000
	श्री शिव कुमार गुप्ता, त्रिकुटा नगर	1000
	श्री भारत भूषण आर्य, छन्नी हिम्मत	1000
	श्री पृथ्वी नाथ रैना, त्रिकुटा नगर	500
	श्री अतिन गुप्ता, त्रिकुटा नगर	500
	डा. राम प्रताप, सैनिक कालोनी	500
	श्री सरदार सिंह डोगरा त्रिकुटा नगर	500
	श्रीमती चाँद रानी, त्रिकुटा नगर	500
8.	सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा	61000

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा को प्राप्त राशि

1.	सर्वश्री आर. एल. आर्या	500
2.	हंसराज वर्मा	100
3.	श्रीमती सरोज मदान	100
4.	लाल सिंह वर्मा	100
5.	प्रेमचन्द गुप्ता	100
6.	श्रीमती शकुन्तला कथूरिया	500
7.	सोमदेव मल्होत्रा	500
8.	राजेन्द्र प्रकाश दुर्गा	5100
9.	श्रीमती अंजलि आर्या	2100
10.	श्रीमती विजय लक्ष्मी पाहवा	5100
11.	आर्य समाज कालका जी	11000
12.	आर्य समाज किरण गार्डन	8700
13.	के. आर. उन्नू	500

– क्रमशः

इस मद में दान देने वाले दानी महानुभावों के नाम आर्य सन्देश के आगामी अंकों में भी प्रकाशित किये जाएंगे। – *सम्पादक*

रजत जयन्ती समारोह

आर्य समाज डी-ब्लॉक विकासपुरी के स्थापना को 25 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में आर्य समाज 2014 को रजत जयन्ती वर्ष के रूप में मना रहा है। कार्यक्रम के समापन समारोह पर आर्य समाज विकासपुरी की ओर से एक स्मारिका का प्रकाशन भी किया जाएगा।

- **हरीश कालरा,** संयोजक, स्मारिका

दयानन्द मठ, चम्बा (हि. प्र.)

34 वाँ वार्षिकोत्सव सम्पन्न

स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज के पावन सानिध्य में मठ चम्बा ने 34वां वार्षिकोत्सव एवं शारदीय यज्ञ (21-26 अक्टूबर 2014) तक धूमधाम से मनाया जिसमें आर्य बन्धुओं ने बढ़-चढ़ कर भाग लिया अनेक विद्वानों के उपदेश को ग्रहण कर धर्म लाभ प्राप्त किया। यज्ञ की सभी ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

- ***मन्त्री***

कश्यपाश्रम केरल की ओर से गरीबों हेतु 'पेन्शन योजना'

'कश्यप वेद रिसर्च फाउन्डेशन' के तत्त्वावधान में आचार्य एम. आर. राजेश ने गरीब लोगों के लिए प्रथम मासिक 'पेन्शन योजना' का शुभारम्भ किया जिससे सारस्वत के प्रधान श्री मुरली धरन जी के कर कमलों से निधि वितरण किया गया। फाउन्डेशन के सचिव श्री सुरेश प्रीरुवायल जी ने कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। इस अवसर पर कश्यपाश्रम के 1500 लोगों को पेन्शन निधि का वितरण किया गया।

वैदिक साहित्य प्रदर्शनी

जिला आर्य प्रतिनिधि सभा कोटा के तत्त्वावधान में महर्षि जीवन-दर्शन व वैदिक साहित्य प्रदर्शनी का शुभारम्भ नगर महापौर श्री राकेश सौरल के कर कमलों द्वारा हुआ। सोरेल जी ने समाज को एक नई सोच एवं अन्धविश्वास एवं अविद्या को नष्ट करने के लिए क्रान्तिकारी कदम बताया जिससे नई पीढ़ी महर्षि के चिन्तन दर्शन से अवगत होगी।

- ***अरविन्द पाण्डेय, सचिव***

श्रीमद्दयानन्द उत्कर्ष आर्ष कन्या गुरुकुल, नारंगपुर मेरठ (उ०प्र०) का

सप्तम वार्षिकोत्सव

2 व 3 नवम्बर 2014

यज्ञ-प्रवचन : प्रात: 9 से 10 बजे
वक्ता : आचार्य सत्यवीर शास्त्री एवं आचार्य आनन्द पुरुषार्थी जी
सांस्कृतिक-कार्यक्रम व व्यायाम-प्रदर्शन
प्रात: 10:00 से 2:00 बजे तक
भजन, प्रवचन व कथा : सायं 7 से 9बजे
आमन्त्रित विद्वत्जन : स्वामी विवेकानन्द जी, स्वामी धर्मेश्वरानन्द जी, स्वामी विश्वानन्द जी, स्वामी चन्द्रदेव जी, स्वामी वेदानन्द जी। - ***आचार्य***

योग साधना शिविर सम्पन्न

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू काश्मीर में पूज्य महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में 14 से 21 सितम्बर तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया गया जिसमें हिमाचल प्रदेश, जम्मू-कश्मीर, राजस्थान, दिल्ली, पानीपत, सोनीपत, उत्तराखण्ड आदि प्रान्तों से शिविरार्थियों ने भाग लिया। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में सामवेद परायण-यज्ञ भी हुआ। आश्रम के प्रधान श्री भारत भूषण आनन्द, कार्यकारी प्रधान श्री विजय भगोतरा, महामन्त्री श्री यादवेन्द्र शर्मा, माता रामप्यारी और श्रीमती सुदेश आदि अन्य महानुभावों के सहयोग से शिविर बहुत ही सफलता पूर्वक सम्पन्न हुआ। - **भारत भूषण आनन्द, प्रधान**

तीन दिवसीय यज्ञ समारोह

आचार्य एम. आर. राजेश के ब्रह्मत्व में कन्नूर में 3 दिवसीय यज्ञ का भव्य आयोजन का शुभारम्भ चिरक्कल कोविल्कम रविन्द्र वर्मा राजा द्वारा दो शताब्दी हाल में दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। श्री आचार्य राजेश जी ने अपने वक्तव्यों में श्रोताओं को वेद की ओर लौटने के रहस्य को समझाया तथा दैनिक यज्ञ के लाभों से साक्षात्कार कराया।

गायत्री महायज्ञ सम्पन्न

दिल्ली में नवरात्र के अवसर पर 25 सितम्बर से 2 अक्टूबर तक माँ गायत्री महायज्ञ एवं संगीतमय रामायण कथा का आयोजन किया गया। 2 अक्टूबर को गायत्री महायज्ञ की पूर्णाहुति एवम् रामकथा का समापन कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यज्ञ के ब्रह्मा एवम् रामकथा वाचन का उत्तरदायित्त्व श्री कुलदीप आर्य (बिजनौर वाले) एवम् उनके सहयोगियों ने वहन किया। 2 अक्टूबर को आर्य समाज सूरजमल विहार में गुरूकुल कांगड़ी हरिद्वार की आयुर्वैदिक दवाइयाँ व अन्य उत्पाद का विक्रय केन्द्र का महाशय धर्मपाल जी ने उद्घाटन किया। इसी अवसर पर वैदिक साहित्य एवम् हवन कुंड व यज्ञ पात्र और हवन सामग्री भी विक्रय हेतु उपलब्ध है।

- ***अशोक गुप्ता, प्रधान***

इंटरनेट के माध्यम से E-gurukul पर सुझाव दें

मित्रों देश-विदेश में अनेक ऐसे युवा हैं जो वेद, दर्शन, उपनिषद्, संस्कृत भाषा सीखने के इच्छुक हैं परन्तु अपनी व्यवसाय, अपनी शिक्षा, अपने परिवार के कारण किसी भी वैदिक गुरुकुल में प्रवेश लेने में असमर्थ हैं। आज इंटरनेट क्रान्ति का युग हैं। इस युग में घर बैठे वैदिक सिद्धांतों से युवाओं को विश्व के किसी भी कोने में परिचित करवाने के लिए e-gurukul का संचालन करने का प्रस्ताव है। आर्यजन अपने सुझाव drvivekarya@yahoo.com पर भेजें। - **डॉ. विवेक आर्य**

आर्यसमाज हनुमान रोड, नई दिल्ली के

92वें वार्षिकोत्सव के अवसर पर

यजुर्वेदीय यज्ञ, भजन एवं प्रवचन

10 नवम्बर से 16 नवम्बर, 2014

यजुर्वेदीय यज्ञ : प्रतिदिन प्रात: 7:30 बजे से 9:15 बजे तक
ब्रह्मा : स्वामी ब्रह्मानन्द जी सरस्वती (बरेली) ऋत्विक : डॉ. कर्णदेव शास्त्री
वेदपाठ : गुरुकुल गौतम नगर के ब्रह्मचारी भजन : श्री रामनिवास शास्त्री
भजन - प्रवचन : सायं 6:30 बजे से 8:30 बजे

आर्य महिला सम्मेलन : 11 नवम्बर, 2014 प्रात+ 10 से 2 बजे
भाषण प्रतियोगिता : शनिवार 15 नवम्बर प्रात: 10 बजे से
विषय : जीवन की उन्नति के साधक वैदिक सिद्धान्त
पूर्णाहुति : समापन एवं विशेष प्रवचन : 16 नवमबर, 2014

मुख्य वक्ता : स्वामी ब्रह्मानन्द - 'सुख की तलाश में भटकता इंसान'
आचार्य श्यामदेव - 'मानव मात्र का धर्म एक ही है'
आचार्य वीरेन्द्र विक्रम - 'माता-पिता और सन्तान का परस्पर दायित्व'
डॉ. अन्नपूर्णा - 'धर्म एवं अधर्म पर महर्षि दयानन्द की चिन्ता'
आप सब अधिकाधिक संख्या में पधारकर धर्मलाभ प्राप्त करें।

- ***दयानन्द यादव, मन्त्री***

अंबेडकर नगर में हुआ सात दिनों तक वेद प्रचार

प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी रामनारायण हाई स्कूल फूलपुर व प्राथमिक विद्यालय नरवा पीताम्बरपुर के प्रांगण में ६ से ९ अक्टूबर एवं १० से १२ अक्टूबर २०१४ तक दोनों गाँवो की आर्य समाजों का वार्षिकोत्सव मनाया गया जिसमे वयोवृद्ध भजनोपदेशक श्री त्रियुगीनारायण पाठक, श्री प्रदीप शास्त्री, श्रीमती सीता आर्या ने अपने मधुर भजनों व सारगर्भित उपदेशों से सभी को लाभान्वित किया। आचार्य श्री आनंद पुरुषार्थी ने यज्ञ , ईश्वर व वेद विषयक व्याख्यान दिये और आर्यसमाज के सिद्धांत पक्ष को स्पष्ट किया। कार्यक्रम के मध्य एक दिन मध्यान्ह में पास के रामलाल वर्मा इंटर कॉलेज सुलेमपुर में ६००-७०० छात्र छात्राओं में भी २ घंटे का प्रचार रखा गया। स्कूल के बच्चो के लिए यह प्रथम अवसर था जब उन्हें वैदिक धर्म के बारे में जानकारी प्राप्त हुई। आचार्य आनंद जी ने कहा हर वर्ष कोलकाता से अपनी जन्म भूमि उत्तर प्रदेश के इस पिछड़े क्षेत्र के अपने अपने गाँवों में परिवार सहित आकर श्री हरीराम आर्य जी एवं श्री राजेंद्र जैसवाल जी यह उत्सव कार्यक्रम रखते है यह भी ऋषि ऋण चुकाने का एक उत्तम प्रयास है।

- ***मनीराम आर्य, प्रधान, आर्यसमाज विधान सरणी,कोलकाता***

यजुर्वेद पारायण महायज्ञ : ग्राम-बिजरौल, जिला- बागपत (उ०प्र०) में डा० सत्येन्द्र पाल सिंह व श्रीमती वेद ज्योति ने दीपावली पर्व के उपलक्ष्य में महर्षि दयानन्द सरस्वती के 132 वें निर्वाण दिवस और बलिदानी देश भक्तों को श्रद्धाञ्जलि के हित यजुर्वेद पारायण यज्ञ का आयोजन धूमधाम से डॉ. अन्नपूर्णा के ब्रह्मत्व में सम्पन्न कराया। यह आयोजन 2 से 6 अक्तूबर तक किया गया।- ***प्रो. सुरेन्द्र आर्य***

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार घोषित

गंगा प्रसाद उपाध्याय पुरस्कार समिति के द्वारा वैदिक साहित्य पर दिया जाने वाला 21000/- का पुरस्कार महाविद्यालय वाराणसी की वेद विदुषी आचार्या सूर्या देवी चतुर्वेदा को उनकी महत्त्वपूर्ण कृति **ब्रह्मवेद है अर्थवेद** पर प्रयाग में आयोजित एक भव्य समारोह में प्रदान किया जायेगा।- ***राधे मोहन, प्रधान***

शोक समाचार

भूतपूर्व सभा प्रधान स्व. श्री सूर्यदेव जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी आर्या का निधन

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के भूतपूर्व प्रधान स्वामी आनन्दबोध सरस्वती जी की सुपुत्री एवं सार्वदेशिक सभा के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान एवं अनेक पदों को सुशोभित करने वाले स्व. श्री सूर्यदेव जी की धर्मपत्नी एवं आर्यसमाज दीवानहाल के मन्त्री मेजर डॉ. रविकान्त जी की पूज्य माताजी श्रीमती सावित्री देवी आर्या जी के दिनांक 15 अक्तूबर, 2014 को लगभग 95 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार अगले दिन निगम बोध घाट पर पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा का आयोजन रविवार 19 अक्तूबर को सतभ्रांवा स्कूल करोल बाग नई दिल्ली में हुआ। इस अवसर पर आर्य केन्द्रीय सभा के प्रधान महाशय धर्मपाल, डॉ. महेश विद्यालंकार, सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य जी एवं अन्य अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धा सुमन अर्पित किए।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

खेद है : पाठकों की सूचनार्थ है कि साप्ताहिक आर्यसन्देश का गत अंक दिनांक 20 अक्तूबर से 26 अक्तूबर, 2014 दीपावली अवकाश के कारण प्रकाशित नहीं हो सका। पाठकों को असुविधा के लिए सम्पादक मंडल खेद व्यक्त करता है।

- सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 27 अक्तूबर से रविवार 2 नवम्बर, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 30/30 अक्तूबर, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 29 अक्तूबर, 2014

प्रथम पृष्ठ का शेष

उड़ीसा प्रान्त में वेद प्रचार के क्षेत्र में नई अलख जगाने के लिए भुवनेश्वर के नीलादि–विहार सरस्वती विद्या मन्दिर परिसर में अक्टूबर 5 से 7 तक जीवन निर्माण शिविर सम्पन्न हुआ है। उड़ीसा प्रान्त के 30 जिले एवं अन्य प्रान्तों से आए 500 शिविरार्थियों ने शिविर में भाग लेके प्रशिक्षण प्राप्त किये जिनमें अधिकतर आर्य समाज व वैदिक विचार के साथ पूर्व से परिचित नहीं थे। कार्यक्रम के अध्यक्ष स्वामी सुधानन्द सरस्वती का वेद प्रवचन ओड़िसा का सब से प्रमुख T.V. Channel OTV में सप्ताह में 4 दिन प्रात:काल आ रहा है, इस से प्रभावित होकर नये लोग शिविर में आये थे।

शिविर के मुख्य प्रशिक्षक थे दर्शन योग महाविद्यालय रोजड़, गुजरात के स्वमी आशुतोष जी परिव्राजक। उन्होंने ध्यान–उपासना प्रशिक्षण देते हुए बताया कि अष्टांग योग ही शान्ति का शश्वत पथ है। स्वामी जी ने प्रत्यह आत्म निरीक्षण व शिविरार्थियों को शंका–समाधान करते हुए बताया। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली का उपमन्त्री श्री विनय जी आर्य शिविरार्थियों को उद्बोधन देते हुए कहा कि–मन में मठ–मन्दिर –गिरजा –मस्जिद आदि के परिसीमा तक ही ईश्वर का अस्तित्व सीमित कर लेने का कारण ही समाज में पाप की प्रवृत्ति बढ़ रही है। ईश्वर का सर्वव्यापक, सर्वशक्तिमान्, सर्वज्ञ आदि वेदोक्त स्वरूप की यथार्थ अवधारणा का प्रसार ही समाज को पापों से निवृत्त कर उन्नत बनाने का उपाय है। स्वामी सुधानन्द प्रत्यह वेद प्रवचन देते हुए कहा कि– सृष्टा के गुण–कर्म–स्वभाव को उस के सृष्टि के माध्यम से ही अत्युत्तम रूप से जाना जा सकता है। पूरे प्रान्त में वेद प्रचार कार्य की समीक्षा भी की गई व लोगों ने बहु उपयोगी सुझाव व सहयोग का प्रस्ताव दिया। स्वामी सुधानन्द जी द्वारा लिखित पुस्तक 'अष्टांग योग' का विमोचन हुआ। भिन्न–भिन्न सत्र में विधाता प्रियदर्शी मिश्रा, विधायक देवाशिष पट्टनायक, कार्पोरेटर प्रीतिनंदा राउतराय व मोनालिसा साहु, इं. प्रियव्रत दास, शन्नों देवी आदि ने भी शिविर को संबोधित किया। ब्र. कवीन्द्र आर्य के नेतृत्व में ओड़िसा के वैदिक भजन मंडली ने प्रभु भक्ति व राष्ट्र भक्ति में सरोबार किया। प्रतिवर्ष श्रुतिन्यास संस्था के माध्यम से आयोजित किये जाने वाले इस शिविर के माध्यम से उड़ीसा में वेद प्रचार के कार्य में नई क्रान्ति का सूत्रपात हुआ है। –***पद्मनाभ स्वामी, सम्पादक***

प्रतिष्ठा में,

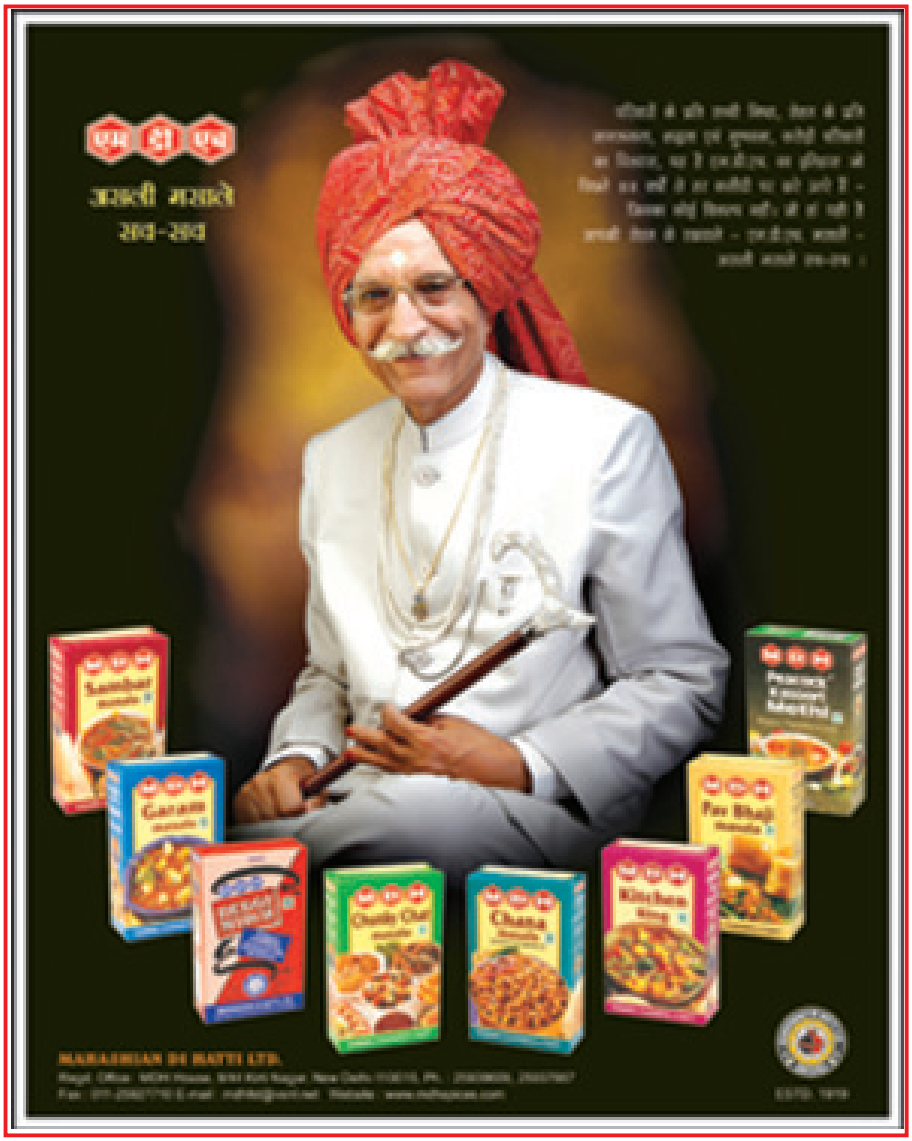

कैलेण्डर वर्ष 2015

बढ़िया 130ग्रा. आर्ट पेपर

20×30 इंच के आकार में

मूल्य 1200/-रुपये सैंकड़ा

15% की विशेष छूट

आज ही अपने आर्डर बुक कराएं

250 से अधिक प्रतियां के आर्डर देने पर नाम से प्रकाशित करने की सुविधा अतिरिक्त शुल्क (200/- सैकड़ा) पर उपलब्ध है। सम्पर्क करें-

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),
15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1
दूरभाष : 011-23360150,
23365959; 09540040339

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह